ज़मीनी अफ़सानों का संकलन...

एक शहर, एक पहाड़, एक मोहल्ला

नीतू यादव

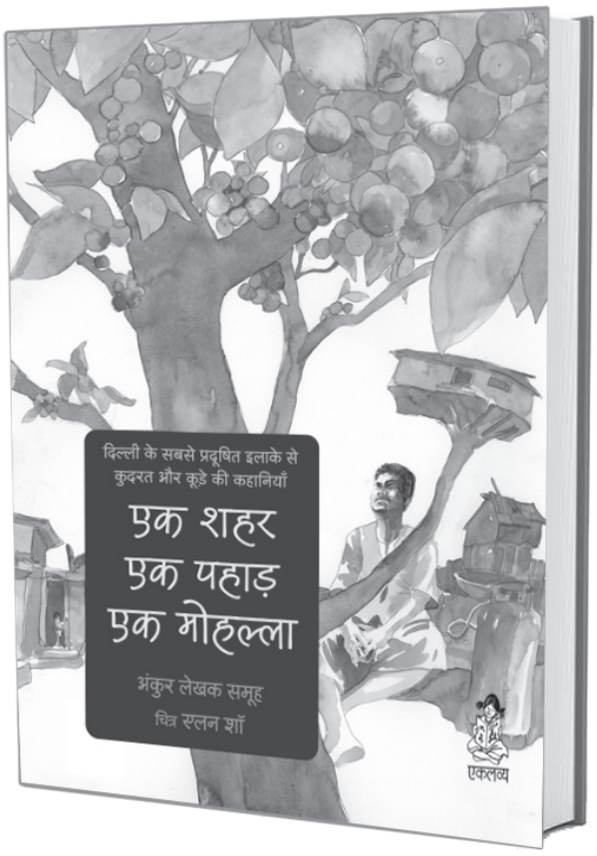

एक शहर
एक पहाड़
एक मोहल्ला

लेखक : अंकुर लेखक समूह
प्रकाशक : एकलव्य प्रकाशन

हाल ही में पढ़ी किताब *एक शहर, एक पहाड़, एक मोहल्ला* ने मुझे काफ़ी प्रभावित किया। इस किताब में लोगों के जीवन से जुड़े जीवन्त अनुभवों के माध्यम से दिल्ली के एक इलाक़े खिचड़ीपुर और उसके आसपास की जगहों को समझने पर ज़ोर दिया गया है। यह किताब पाँच खण्डों में लिखी गई है। और ये पाँचों खण्ड आम जन-जीवन और पर्यावरण पर प्रदूषण व उसके प्रभाव से जुड़े अलग-अलग महत्त्वपूर्ण और मूलभूत मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं। जब मैंने यह किताब पढ़ी, मुझे लगा जैसे मैं एक अलग ही दिल्ली में जा पहुँची हूँ। वो दिल्ली जो कभी चर्चाओं में नहीं रही, वो जिसे कम ही लोग जानते होंगे, और वो दिल्ली जो शायद अब तक किताबों का हिस्सा नहीं बनी थी। यह किताब एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है जो बड़ी सादगी के साथ कुछ गहरे सवाल उठाती है।

यह किताब बेहद संवेदनशीलता के साथ हमें उन आम लोगों के जीवन की झलक दिखलाती है जो प्राकृतिक के साथ ही कृत्रिम बाधाओं के साए में ख़ुद को ज़िन्दा रखने की जद्दोजहद में लगे हैं। यह किताब दिल्ली के खिचड़ीपुर इलाक़े पर केन्द्रित है। यह दिल्ली का सबसे प्रदूषित इलाक़ा है, और दिल्ली के सबसे बड़े लैंडफ़िल के आसपास बसा हुआ है। लैंडफ़िल मतलब कूड़े-कचरे का विशाल पहाड़। इसके इर्द गिर्द लोगों का

जीवन चल रहा है, और वो कूड़ा पहाड़ काफ़ी विशाल है। यह कूड़ा पहाड़ लोगों के जीवन में कुछ इस हद तक समा चुका है कि जब वे किसी विशाल चीज़ की तुलना भी करते हैं तो ये कूड़ा पहाड़ उनके लिए एक पैमाना बन जाता है। यह बात किताब के पहले खण्ड के पहले अध्याय की शुरुआती लाइनों में दर्ज अनुभवों से समझ आती है :

"क्या तुमने क़ुतुब मीनार देखी है?"

"हाँ, लेकिन सिर्फ़ किताब में ही देखी है, पास से नहीं देखी।"

"पता है क़ुतुब मीनार बहुत ऊँची होती है, बहुत बड़ी भी।"

"कितनी ऊँची? लैंडफ़िल से भी बड़ी क्या?"

"तुम सबकी सारी बातचीत लैंडफ़िल के आसपास आकर क्यों रुक जाती है?"

"क्योंकि हम सबने पास से लैंडफ़िल को ही देखा है और यही हमारी दुनिया भी है।"

इससे हम कूड़ा पहाड़ की विशालता का अन्दाज़ा लगा ही सकते हैं। इसके साथ ही मन में एक सवाल भी उभर आता है कि जब हम किसी ऐसी जगह से गुज़रते हैं जहाँ कचरा डंप किया जाता है हम एक पल भी बिना अपनी नाक पर हाथ रखे वहाँ खड़े नहीं रह सकते। फिर भला ये लोग, जो इतने बड़े कूड़े के पहाड़ के आसपास रहते हैं, वहाँ कैसे रह पाते होंगे! इस किताब को पढ़कर काफ़ी हद तक वहाँ रहने वाले लोगों की असल परिस्थिति से वाक़िफ़ हुआ जा सकता है।

8 साल से अधिक उम्र के पाठकों के लिए तैयार की गई कथेतर श्रेणी की यह किताब 135 पन्नों की है। इसे पठनीय और आकर्षक बनाने के लिए कुछ बातों का ख़ासा ध्यान रखा गया है। जैसे– इस किताब का आवरण पृष्ठ जो देखने में आकर्षक होने के साथ-साथ किताब की विषयवस्तु की झलक भी बख़ूबी दे रहा है।

किताब की विषयवस्तु बेहद संजीदा है। यह एक शहर, एक पहाड़, एक मोहल्ले और वहाँ फैले प्रदूषण के आम लोगों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को तो बयाँ करती ही है, साथ ही पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता भी बनाती है, और इसमें समाधान की तलाश भी है। यह किताब दिल्ली के प्रदूषित इलाक़ों की समस्याओं को समझने और उनके समाधान की दिशा में एक क़दम हो सकती है।

इस किताब की भाषा भी आपको अपनी ओर खींच लेती है। इसके शुरुआती पन्नों के कुछ अंश यहाँ पढ़े जा सकते हैं :

“पहाड़ों पर शहर तो उगते आए हैं, पर शहरों में पहाड़ उगते हुए देखना सबसे हैरतअंगेज़ परिघटना है।’’

“जब भी हम एक सुन्दर प्रकृति की कल्पना करते हैं तो उसे इंसान विहीन कर देते हैं। हमारी उस कल्पना में आसमान नीला हो जाता है, पानी साफ़, पेड़ हरे-भरे, चिड़ियाँ चहचहाती हुईं... पर हमारे हिस्से की दिल्ली में इंसान, पेड़, जीव-जन्तु, गन्ध, हवा-पानी, शोर, सबकुछ साथ और सजीव हैं। इस ‘प्रकृति’ से हम कैसे जुड़ाव बनाते हैं और कैसे इसमें जीते हैं, यही हमारी संस्कृति है।’’

किताब की भाषा आपको अचरज से भर देती है, और अगले पन्नों को पलटने के लिए एक ट्रिगर का काम करती है। इस तरह का कहन एक तरह के विश्लेषण में भी ले जाता है, और हमें हमारे अन्दर झाँकने को मजबूर करता है। हम जब अपने आसपास नज़र दौड़ाते हैं या ख़ुद को टटोलते हैं, हम पाते हैं कि वास्तव में हम ऐसा ही तो करते हैं। जब हम प्रकृति की बात करते हैं, हमारा ध्यान पेड़-पौधों, नदी-तालाबों के इतर जाता ही नहीं।

इस किताब के चित्र एलन शॉ द्वारा बनाए गए हैं। चित्रों में वाटर कलर के इस्तेमाल और रंग संयोजन से पात्रों के भावों को इस तरह उभारा गया है कि वे हमें हूबहू महसूस होने लगते हैं। वास्तविकता को पुख़्ता करने के लिए मूल तस्वीरों का उपयोग, खिचड़ीपुर को दिल्ली में चिह्नित करता एक नक़्शा, खिचड़ीपुर की लाइन ड्रॉइंग और किताब में कबाड़ की विविधता को बताता कबाड़-कोष। यह एक इशारा है कि शहर कितनी बड़ी तादाद में कबाड़ के सृजक बन रहे हैं।

एक और बात जो इस किताब को ख़ास बनाती है, वो हैं इसके रचनाकार। ये दिल्ली शहर के खिचड़ीपुर इलाक़े में रहने वाली किशोरियाँ हैं। उनके वास्तविक अनुभवों और उनके आसपास रहने वाले लोगों के जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं पर आधारित यह संकलन अपने-आप में अनूठा है।

यह सभी लेखक अंकुर सोसाइटी फ़ॉर ऑल्टर्नेटिव्ज़ इन एजुकेशन में लेखन अभ्यास करते हैं। यह किताब इन उभरते लेखकों को मंच देने का एक प्रयास है।

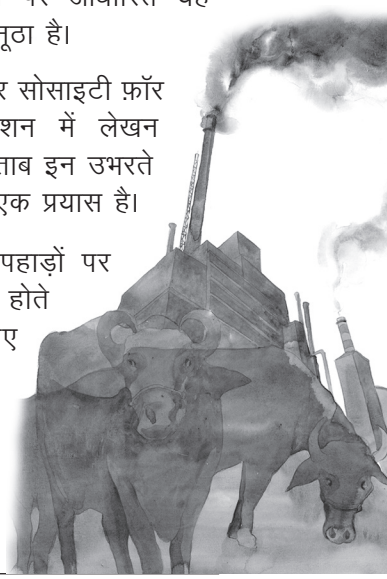

किताबों में अकसर पहाड़ों पर शहरों के बसने के क़िस्से होते हैं, पर यह किताब इसलिए ख़ास है क्योंकि यह हमें दिल्ली जैसे शहर में पहाड़ उगने का एक ख़ास क़िस्सा सुनाती है, और कोई ऐसा-वैसा

पहाड़ नहीं, कूड़े-कचरे का पहाड़। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह किताब हमें दिल्ली शहर की चकाचौंध के विपरीत कूड़ा पहाड़ के इर्द गिर्द बसे मोहल्लों में ले जाती है, और वहाँ के स्थानीय लोगों के रोज़ के अनुभवों, शहर की आबोहवा बदलने के स्थानीय क़िस्सों को नज़दीक से महसूस करने के मौक़े देती है।

बच्चों की ज़्यादातर किताबों में जब दिल्ली की बात होती है, दिल्ली राजनीतिक व ऐतिहासिक घटनाओं तक ही सिमटकर रह जाती है। शिक्षा तंत्र में कोई भी पाठ्यक्रम स्थानीय इतिहास, संस्कृति, समस्याओं और सम्बन्धों को चर्चा के लायक़ नहीं समझता। आमतौर पर पाठ्यक्रम में बच्चों को स्थानीय मुद्दों से दूर ही रखा जाता है। लेकिन बच्चों को यह पता होना चाहिए कि शहरों और मोहल्लों में रोज़मर्रा की ज़िन्दगी जीते हुए जो देखा, सुना और जाना है, वह भी ज्ञान के दायरे में आता है। इसलिए इस किताब का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसमें सँजोए गए अनुभवों से गुज़रकर

बच्चे एक ख़ास परिस्थिति से रूबरू हो सकेंगे, और बच्चे ही क्यों, मुझे लगता है हर किसी को यह किताब ज़रूर पढ़नी चाहिए।

नीतू यादव, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के कामों में लम्बे समय से जुड़ी हुई हैं। अपने अनुभवों को लेखन के माध्यम से साझा करना, और बच्चों के लिए कहानियाँ लिखने में ख़ास दिलचस्पी है। वर्तमान में, एकलव्य फ़ाउण्डेशन की शिक्षा साहित्य टीम और 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स का हिस्सा हैं।

सम्पर्क : neetu.yadav23@yahoo.in